Krishi Kumbh
Online E-Magazine
Www.KrishiKumbh.Com

कृषि कुंभ

E-ISSN: 2582-9769

कृषि कुंभ
हिंदी मासिक पत्रिका

खण्ड 05 भाग 10, (मार्च, 2026)
पृष्ठ संख्या 30–31

टमाटर मूल्य संवर्धन का महत्वः वाराणसी जिले का एक अध्ययन

सुप्रिया[1], इशिता उमर[2] एवं प्रतीक कुमार[3]

[1]एसोसिएट प्रोफेसर, कृषि अर्थशास्त्र विभाग,
[2]पीएच.डी. स्कॉलर, कृषि अर्थशास्त्र विभाग,
[3]पीएच.डी. स्कॉलर, कृषि विस्तार शिक्षा विभाग,
आचार्य नरेंद्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, अयोध्या उत्तर प्रदेश, भारत।

Email Id: – drsupriya.anduat2019@gmail.com

परिचय

टमाटर भारत की प्रमुख सब्जी फसलों में से एक है, जिसका उपयोग दैनिक आहार में व्यापक रूप से किया जाता है। यह न केवल स्वाद और पोषण की दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि किसानों के लिए एक महत्वपूर्ण नगदी फसल भी है। टमाटर में विटामिन–ब, विटामिन–। तथा लाइकोपीन जैसे पोषक तत्व प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं, जो मानव स्वास्थ्य के लिए लाभकारी हैं। भारत विश्व के प्रमुख टमाटर उत्पादक देशों में से एक है और देश में प्रतिवर्ष लगभग 21ृ22 मिलियन टन टमाटर का उत्पादन होता है। उत्तर प्रदेश के पूर्वांचल क्षेत्र में स्थित वाराणसी जिले में भी टमाटर की खेती व्यापक रूप से की जाती है और यहाँ इसकी औसत उत्पादकता लगभग 354.56 क्विंटल प्रति हेक्टेयर पाई जाती है। इस प्रकार टमाटर क्षेत्रीय कृषि अर्थव्यवस्था और किसानों की आय में महत्वपूर्ण योगदान देता है।

भारत एवं वाराणसी में टमाटर उत्पादन की स्थिति

भारत में टमाटर का उत्पादन तेजी से बढ़ रहा है और यह देश की बागवानी अर्थव्यवस्था का महत्वपूर्ण हिस्सा बन चुका है। कई राज्यों के साथ–साथ उत्तर प्रदेश भी टमाटर उत्पादन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। वाराणसी जिले में उपजाऊ भूमि, अनुकूल जलवायु तथा बाजार की उपलब्धता के कारण टमाटर की खेती बड़े पैमाने पर की जाती है। यहाँ उत्पादित टमाटर स्थानीय मंडियों के साथ–साथ आसपास के शहरी बाजारों में भी भेजा जाता है। लगभग 354.56 क्विंटल प्रति हेक्टेयर की औसत उपज इस क्षेत्र में टमाटर की उत्पादन क्षमता को दर्शाती है। इसके बावजूद किसानों को विपणन, भंडारण तथा मूल्य अस्थिरता जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

टमाटर की नाशवान प्रकृति एवं बाजार अस्थिरता

टमाटर एक अत्यंत नाशवान और मौसमी फसल है, जिसकी शेल्फ लाइफ सीमित होती है। कटाई के बाद उचित भंडारण और परिवहन सुविधाओं के अभाव में यह जल्दी खराब हो जाता है, जिससे पश्चात–कटाई हानि अधिक होती है। जब टमाटर की फसल एक साथ बड़ी मात्रा में बाजार में आती है और मांग उतनी नहीं होती, तो बाजार में टमाटर की अत्यधिक आपूर्ति हो जाती है। इस

स्थिति को अधिशेष आपूर्ति की स्थिति कहा जाता है। इससे कीमतें अचानक गिर जाती हैं और कई बार किसानों को अपनी उत्पादन लागत भी नहीं मिल पाती। ऐसी परिस्थितियों में किसानों को मजबूरी में टमाटर सड़कों पर फेंकने या खेत में ही नष्ट होने देने की स्थिति का सामना करना पड़ता है। इस प्रकार की बाजार अस्थिरता और नुकसान के कारण कई किसान अपेक्षाकृत अधिक स्थिर आय देने वाली अन्य फसलों की ओर भी रुख करने लगे हैं।

टमाटर मूल्य संवर्धन की संभावनाएँ और आवश्यकता

इन समस्याओं के समाधान के लिए टमाटर का मूल्य संवर्धन एक प्रभावी उपाय हो सकता है। वाराणसी जिले में कई खाद्य प्रसंस्करण इकाइयाँ तथा लघु उद्योग मौजूद हैं, जो टमाटर आधारित उत्पादों के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। टमाटर से केचप, सॉस, पेस्ट, प्यूरी, जूस, सूखा टमाटर, टमाटर पाउडर तथा रेडी–टू–कुक उत्पाद तैयार किए जा सकते हैं। इन उत्पादों के निर्माण से टमाटर की शेल्फ लाइफ बढ़ाई जा सकती है, पश्चात–कटाई हानि को कम किया जा सकता है और किसानों को बेहतर मूल्य प्राप्त हो सकता है। इस प्रकार टमाटर का मूल्य संवर्धन न केवल किसानों की आय बढ़ाने में सहायक है बल्कि क्षेत्रीय कृषि अर्थव्यवस्था को भी सुदृढ़ बनाने की क्षमता रखता है।

निष्कर्ष और सुझाव

उपरोक्त चर्चा से स्पष्ट होता है कि वाराणसी जिले में टमाटर की खेती किसानों के लिए आय का एक महत्वपूर्ण स्रोत है, किंतु इसकी नाशवान प्रकृति, सीमित भंडारण क्षमता तथा बाजार में कीमतों की अस्थिरता के कारण किसानों को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। उत्पादन के मौसम में अत्यधिक आपूर्ति के कारण अक्सर कीमतों में गिरावट आ जाती है, जिससे किसानों को अपनी लागत भी प्राप्त नहीं हो पाती और कई बार उन्हें टमाटर को नष्ट करने जैसी परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है। ऐसी स्थिति में टमाटर का मूल्य संवर्धन एक प्रभावी समाधान के रूप में उभरता है, जो न केवल पश्चात–कटाई हानि को कम करने में सहायक है बल्कि किसानों की आय को स्थिर और अधिक लाभकारी बनाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। वाराणसी जिले में उपलब्ध खाद्य प्रसंस्करण इकाइयों, लघु उद्योगों तथा कृषि आधारित उद्यमों के माध्यम से टमाटर से केचप, सॉस, पेस्ट, प्यूरी, जूस, सूखा टमाटर तथा अन्य प्रसंस्कृत उत्पादों का निर्माण किया जा सकता है। इन उत्पादों के माध्यम से टमाटर की शेल्फ लाइफ बढ़ाई जा सकती है और बाजार में इसकी मांग को पूरे वर्ष बनाए रखा जा सकता है। इसके अतिरिक्त, यदि किसानों को प्रसंस्करण तकनीकों, भंडारण सुविधाओं और विपणन नेटवर्क की उचित जानकारी तथा प्रशिक्षण प्रदान किया जाए, तो वे स्वयं भी मूल्य संवर्धन गतिविधियों से जुड़कर अतिरिक्त आय अर्जित कर सकते हैं। नीतिगत स्तर पर यह आवश्यक है कि सरकार द्वारा कोल्ड स्टोरेज सुविधाओं का विस्तार, प्रसंस्करण इकाइयों की स्थापना, किसान उत्पादक संगठनों को प्रोत्साहन, तथा कृषि आधारित लघु उद्योगों के लिए वित्तीय सहायता प्रदान की जाए। साथ ही किसानों को प्रसंस्करण, पैकेजिंग और ब्रांडिंग से संबंधित प्रशिक्षण देकर उन्हें कृषि उद्यमिता की ओर प्रेरित किया जाना चाहिए। यदि इन उपायों को प्रभावी रूप से लागू किया जाए, तो वाराणसी जिले में टमाटर के मूल्य संवर्धन के माध्यम से न केवल पश्चात–कटाई हानि को कम किया जा सकता है, बल्कि किसानों की आय में उल्लेखनीय वृद्धि कर क्षेत्रीय कृषि अर्थव्यवस्था को भी सुदृढ़ बनाया जा सकता है।

"तथापि यह लेख उत्तर प्रदेश कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा वित्तपोषित आचार्य नरेंद्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के कृषि अर्थशास्त्र विभाग द्वारा संचालित परियोजना 'उत्तर प्रदेश के आर्थिक क्षेत्रों में किसानों की आजीविका स्थिति में सुधार हेतु प्रमुख कृषि जिन्सों की मूल्य श्रृंखलाः एक लाभकारी दृष्टिकोण' के अंतर्गत तैयार किया गया है।"